गुड़ी पड़वा

नई धूप ने फिर सपनों को जगाया है आज,
गुड़ी ने हर घर में उत्सव सजाया है आज।

बीते कल की धूल को झाड़ दिया हमने,
नए वर्ष ने विश्वास दिलाया है आज।

कड़वे नीम में भी मिठास खोज ली हमने,
जीवन का सही अर्थ बताया है आज।

टूटे हौसलों को सहारा मिला फिर से,
समय ने खुद को दोहराया है आज।

चलो प्रण करें सच के साथ चलने का,
गुड़ी पड़वा ने यही सिखाया है आज।

- राधिका

अरसा बिता

बहुत अरसे से मिल रहे हो
शायद तुम थे कही हम थे कही
यु भुलना तो नही चाहते थे
पर उम्मीद थी नई, थी नई किरण
उसने कहा खत्म करदो ये रण
फिरसे मिलेगी उम्मीद नई
खिलखिलाकर हँसकर बोला मै
ना अब है किसी उम्मीद के वास्ते कि जरूरत
क्युकी बरसो बीते तेरी राह मे
जब ऑख खुली तब जाना
कोई और भी कर रहा है मेरा इंतजार
कुछ इसी तरह ना कर सकता उसको ना उम्मीद
कही बिखर ना जाऐ मोती माला के
डरता हु मै कही गुम ना हो जाऐ मोती माला के
अरसा बिता जालिम तेरे इंतजार को

-दिनेश शेळके

ग़ज़ल

हर घर में जब गुड़ी सजी,
किस्मत भी मुस्कुराने लगी।

पुरानी थकान उतर गई,
नई सुबह गीत गाने लगी।

नीम-गुड़ ने समझा दिया,
जीवन मीठा-कड़वा दोनों सही।

जो टूटे थे कल हालात से,
आज फिर उम्मीद जगाने लगी।

'प्रकृति की भाषा'

पेड़ बोलते नहीं, फिर भी
हमें जीना सिखाते हैं।
धूप में खड़े रहकर भी
छाया देना बताते हैं।

नदियाँ थकती नहीं कभी,
चलते रहना सिखाती हैं।
पत्थरों से टकराकर भी
राह बनाना बताती हैं।
फूल बिना बोले कह जाते,
सुंदर होना सरल होता है।
खुशबू बाँटना ही असली
जीवन का सबसे बड़ा गुण होता है।

पंछी रोज़ नया गीत रचें,
कल की चिंता नहीं करते।
आज में जीना सीखें हम,
तो दुख अपने आप डरते।

प्रकृति की यह शांत किताब,
हर पल हमें समझाती है –
जो झुकना जानता है समय पर,
वही सबसे ऊँचा जाता है।

'धरती का संदेश'

मैं धरती हूँ, सबकी माँ,
तुम मेरे अपने बच्चे हो।
मैंने तुम्हें पहाड़ दिए,
नदियाँ, जंगल, सच्चे हो।

तुमने मेरे आँचल से ही
घर और सपने बुने हैं।
मेरे ही सीने से लेकर
लोहे और सोने चुने हैं।

पर जब तुम मुझे भूल गए,
बस अपने मतलब में खो गए,
हवा बीमार, पानी रोया,
पेड़ कटे और गीत सो गए।

अब भी समय है, लौट आओ,
मुझसे फिर दोस्ती कर लो।
लोभ नहीं, बस प्रेम से
मेरी गोद फिर हरी कर लो।

मैं फिर फूल खिलाऊँगी,
नदियाँ गीत सुनाएँगी,
जब मानव और प्रकृति साथ चलें,
दुनिया स्वर्ग बन जाएगी।

आधुनिक सोच

नया साल सिर्फ कैलेंडर नहीं,
नया सोचने का वादा है।

गुड़ी सिर्फ लकड़ी का डंडा नहीं,
आत्मसम्मान का झंडा है।

जो डर गए थे कल की हार से,
आज उठें विश्वास के भार से।

गुड़ी पड़वा सिखाती है हमको,
खुद पर भरोसा सबसे बड़ा हथियार है।

-सुभाष गांधी